Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 11, Nov - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Received on : 29/10/2021 Accepted on : 09/11/2021 Publication Date: 15/11/2021

पंडित दीनदयाल उपाध्याय संक्षिप्त जीवन परिचय

सुनील कुमार
शौधार्थी, कैरियर पॉइंट यूनिवर्सिटी, जिला - हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश
Email: sunilsharmadfzo@gmail.com

सारांश: *प्रस्तुत शोध प्रबंध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के संक्षिप्त जीवन परिचय पर गहनता से विवेचना की गई है। पंडित जी के बचपन से लेकर एक प्रचारक तक तथा भारतीय जनसंघ के महामंत्री से लेकर अध्यक्ष बनने तक उन हर पहलुओं को संक्षिप्त रूप में शोध में शामिल किया गया है। पंडित दीनदयाल जी का जीवन शुरू से अंत तक संघर्षमय ही रहा। परन्तु विपरीत परिस्थितियाँ होने के बावजूद भी आम जनमानस के दिलों में अमिट छाप छोड़ जाना यह पंडित जी के जीवन से सीख सकते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसी आलोकिक महान आत्माएं धरा पर बार-बार अवतरित नहीं होती। प्रस्तुत शोध प्रबंध में पंडित जी के जीवन में घटित हुई लगभग सभी बड़ी घटनाओं को संक्षिप्त रूप में शामिल किया गया है।*

मुख्य बिंदु : *एकात्म मानववाद, भारतीय परंपराएं, कार्यसिद्धता, संस्कार क्षमता, बौद्धिक प्रखरता, राजनीतिक संस्कृति, संगठनकर्ता, विचारक, राष्ट्र निर्माण, संस्कृतिक पुनरुत्थान ।*

1. प्रस्तावना:-

अखंड भारत की जिस सैद्धांतिक पृष्ठ भूमि में जनसंघ का जन्म हुआ था। उसके कारण जनसंघ की आवाज पहले दिन से ही राष्ट्रीय अखंडता एवं द्वि-राष्ट्र के विचार उत्पन्न हुए, पाकिस्तान विरोध के मुद्दों को मुखरित करने वाली सिद्ध हुई थी। अंतरित मुद्दों में भी जितनी भावात्मकता के साथ जनसंघ ने प्रांतीय, जातिय व भाषिक पृथकतावादों का प्रतिकार किया था, उतना अन्य किसी ने नहीं। जनसंघ के इस राष्ट्रवादी आग्रह के पुरोधा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ही थे। उन्होंने ही एक ऐसा राजनीतिक दल विकसित किया, जो सामुदायिक व भौतिक स्वार्थों के आधार पर संगठित अन्य राजनीतिक दलों की तुलना में राष्ट्रीय एकता व अखंडता के मुद्दों को न केवल आंदोलन का विषय बना सका वरन् लोगों को इन मुद्दों पर संगठित कर बलिदान के लिए भी तैयार कर सका। पंडित जी ने ही लगभग दो दशकों के गूढ़ अध्ययन व अनुभव के बाद अपनी विचारधारा को एकात्म मानववाद के नाम से भारतीय जनसंघ के सिद्धांत और नीति प्रलेख में उद्घोषित किया था।

पंडित जी एक राष्ट्रवादी विचारक और भारतीय राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने हिंदू शब्द को कभी भी धर्म के साथ नहीं जोड़ा, बल्कि भारतीय संस्कृति के रूप में परिभाषित किया था। पंडित जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक से लेकर भारीतय जनसंघ के अध्यक्ष तक विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए एकात्म मानववाद का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करते रहे। उन्होंने राजनीति के अलावा भारतीय साहित्य में भी विशेष योगदान दिया। उनके द्वारा सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य व चाणक्य पर आधारित नाटक सम्राट चंद्रगुप्त बहुत पसंद किया गया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मदद से भारतीय जनसंघ की स्थापना की थी, जो बाद में चलकर आज की भारतीय जनता पार्टी के नाम से जानी जाती है। पंडित जी ने ही एकात्म मानववाद के आधार पर भारत राष्ट्र की कल्पना की थी, जिसमें विभिन्न राज्यों की संस्कृतियां आपस में मिलकर एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर सके।

2. शोध उद्देश्य:

- भारतीय संस्कृति के विषय में उपाध्याय जी के विचारों पर प्रकाश डालना
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के कुशल संगठनकर्ता के रूप में नेतृत्व क्षमता की विस्तृत व्याख्या करना
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के भारतीय राजनीति में दिए गये महत्वपूर्ण योगदान की विस्तृत विवेचना
- विपरीत परिस्थितियों के परिवेश से भी उर्जा ग्रहण कर अपने व्यक्तित्व का विकास

3. शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध-कार्य में निम्नलिखित अनुसंधान प्रविधियों का प्रयोग किया गया है:-

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान नई दिल्ली से प्रकाशित तथ्यों का संकलन।
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति संस्थान नई दिल्ली से प्रकाशित तथा अप्रकाशित साहित्य का संकलन।
- भारतीय जनता पार्टी व पूर्व में रहे भारतीय जनसंघ नेताओं के साक्षात्कार।

- राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित अर्थशास्त्रियों के साक्षात्कार।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारियों एंव वरिष्ठ प्रचारकों से विस्तृत चर्चा।
- ग्रंथालयों में उपलब्ध ग्रंथों, शोध ग्रंथों एंव पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री का अन्वेषण।
- वेबसाइट, ब्लॉग एंव पत्रिकाओं इत्यादि में उपलब्ध सामग्री का अन्वेषण।

उपर्युक्त शोध कार्य में मौलिकता लाने हेतु वैज्ञानिक, एतिहासिक तथा विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

4. जीवन परिचय:-

पंडित जी का बचपन एक सामान्य उत्तर भारतीय निम्न मध्यम वर्गीय सनातनी हिंदू वातावरण में बीता। ब्रज भूमि के मधुरा जिले में मधुरा से 25 किलोमीटर दूर एक छोटा सा गांव है 'नगला चंद्रभान' इस गांव में कभी विख्यात ज्योतिषि पंडित हरि राम उपाध्याय जी अपने सहोदर अनुज श्री झण्डू राम जी के साथ रहा करते थे। पंडित हरि राम के तीन पुत्र थे-भूदेव, राम प्रसाद तथा राम प्यारे और झण्डू राम जी के भी दो पुत्र थे। शंकर लाल और बंशी लाल। पंडित हरि राम उपाध्याय जी के पुत्र श्री राम प्रसाद के यहाँ पुत्र हुआ, जिनका नाम भगवती प्रसाद रखा गया। श्री भगवती प्रसाद जी का विवाह श्रीमति रामप्यारी से हुआ। रामप्यारी जी एक धार्मिक स्वभाव की स्त्री थीं। वे अपने पूजा पाठ के कार्यों में सदा लगी रहती थीं।

अशिवन कृष्ण त्रियोदशी संवत् 1973 दिनांक 25 सितंबर 1916 को भगवती प्रसाद जी के घर एक दिव्य पुत्र की प्राप्ति हुई। तब श्रीमति रामप्यारी जी अपने पिता श्री चुनी लाल शुक्ल के पास धनकिया (राजस्थान) में थीं। श्री चुनी लाल जी धनकिया में स्टेशन मास्टर थे। बालक को घर में सब दीना के नाम से बुलाते थे। क्योंकि इनका पुरा नाम दीनदयाल रखा गया था। दो वर्षों बाद श्रीमति रामप्यारी जी को एक और पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम शिवदयाल रखा गया। उसको घर के सभी लोग शिबू के नाम से बुलाते थे। ढाई साल की अवस्था में पितृ गृह छूटने के बाद दीनदयाल वापस वहां रहने के लिए कभी नहीं लौटे। उनका पालन-पोषण व विकास एक प्रकार से असमान्य परिस्थिति में हुआ था। वे परिस्थितियां ऐसी भी थीं, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व बुझ जाए, लेकिन दीदयाल ने इसी परिवेश में ऊर्जा ग्रहण कर अपने व्यक्तित्व का विकास किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय मात्र तीन वर्ष के ही हुए थे कि उस समय उनके सिर से पिता का साया उठ गया। पिता की मृत्यु के बाद पूरे परिवार का जीवन अंधकारमय सा हो गया। पति की मृत्यु का दु:ख उनकी माता रामप्यारी जी भी सहन नहीं कर पाई। अत: वे रोज बीमार रहने लगी। कुछ समय के बाद पता चला कि उनकी माता रामप्यारी जी को क्षयरोग हो गया है। उस समय क्षय रोग होने का मतलब मृत्यु निश्चित होता था। इस तरह 08 अगस्त 1924 को उनकी माता रामप्यारी दोनों बच्चों को अकेला छोडक़र ईश्वर को प्यारी हो गई। मात्र सात साल की ही उम्र में पंडित जी के सिर से मॉ-बाप का साया उठ गया।

साल 1934 में छोटे भाई शिवदयाल को आंत्र ज्वर (टाइफायड) हो गया। पंडित दीनदयाल जी ने उसे बचाने की बहुत कोशिश की। परन्तु वह इसमें सफल नहीं हो पाए और छोटे भाई भी इस दुनिया को छोडकर चले गये।

5. प्रारंभिक शिक्षा:-

परिस्थितियां जिस प्रकार की रही, तदानुसार नौ वर्ष की आयु तक उनकी पढ़ाई की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी थी। साल 1925 में गंगापुर में अपने मामा राधारमण के यहां आने पर उनकी प्रारंभिक शिक्षा प्रारंभ हुई। घर में कोई अन्य विद्यार्थी न होने के कारण परिवार में पढ़ाई का वातावरण भी नहीं था। परिवार पर बार-बार दु:खों के पहाड़ टूट रहे थे। शिक्षा से संबंधित सुविधाओं का पूरी तरह से अभाव था। दीनदयाल अभी दूसरी कक्षा में ही हुए थे कि अब मामा राधारमण बहुत बिमार पड़ गए। दीनदयाल मामा की सेवा के लिए उनके उपचार्राथ, उनके साथ आगरा गये। परीक्षा के कुछ ही दिन पूर्व मामा राधारमण गंगापुर वापस आए और दीनदयाल ने परीक्षा दी। वे अपनी कक्षा में प्रथम आए थे। अपने मामा की सेवा में रहते हुए ही उन्होंने तीसरी तथा चौथी की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसी समय उनके अध्यापकों तथा मामा राधारमण को उनके मेधवी विद्यार्थी होने का एहसास हुआ। कक्षा पांचवी से सातवीं तक की पढ़ाई दीनदयाल ने कोटा (राजस्थान) में की। उसके बाद आठवीं कक्षा के लिए उन्होंने राजगढ़ में प्रवेश लिया। बचपन में गणित विषय उनका पसंदीदा विषय हुआ करता था। जब वे नौंवी कक्षा में थे, तो दसवीं कक्षा के प्रश्न पत्रों को हल कर दिया करते थे। अब नौंवी कक्षा उत्तीर्ण कर चुके थे और दसवीं कक्षा में उन्हें प्रवेश लेना था। परन्तु एक बार फिर उन्हें वहां से जाना पड़ा। क्योंकि मामा जी का तबादला सीकर हो गया था। अत: दीनदयाल जी ने अब दसवीं कक्षा के लिए सीकर के कल्याण उच्च विद्यालय में दाखिला ले लिया और उसी विद्यालय से दसवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे न केवल प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए वरन् समस्त बोर्ड की परीक्षा में भी सर्वप्रथम रहे। उस समय के सीकर के महाराजा कल्याण सिंह ने स्वर्ण पदक प्रदान किया और उसके साथ

10 रुपये महावार छात्रवृति तथा पुस्तक आदि शेष पाठ्यसामग्री के लिए 250 रुपये की प्रोत्साहन राशि ईनाम स्वरूप भेंट की। उन दिनों पिलानी उच्च शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र हुआ करता था। दीनदयाल उच्चतर माध्यमिक की पढ़ाई के लिए साल 1935 में पीलानी चले गए। साल 1937 में उच्चतर माध्यमिक की परीक्षा दी। इस परीक्षा में भी दीनदयाल जी ने सर्वाधिक अंक प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। इससे पहले बिड़ला महाविद्यालय में किसी भी विद्यार्थी ने इतने अंक प्राप्त नहीं किए थे, जितने दीनदयाल ने प्राप्त किए थे। यह बात जब घनश्यामदास बिड़ला को पता चली, तो वे अति प्रसन्न हुए। बिड़ला जी ने स्वर्ण पदक प्रदान करते हुए दीनदयाल जी को अपनी संस्था में नौकरी की भी घोषणा की। परन्तु दीनदयाल जी ने विनम्रता पूर्वक धन्यवाद करते हुए आगे पढने की इच्छा व्यक्त की। इस बात से बिड़ला जी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने छात्रवृति की घोषणा कर दी और कहा दीनदयाल तुम आगे पढना चाहते हो, यह बहुत अच्छी बात है। हमारे यहां तुम्हारे लिए एक नौकरी हमेशा खाली रहेगी। तुम जब चाहो आ सकते हो।

6. महाविद्यालय तथा संघ कार्यक्रमों में प्रवेश:-

दीनदयाल जी में उच्च शिक्षा ग्रहण करने की इतनी ललक थी कि वह कई घंटों तक मनचित लगाकर किताबें पढ़ते रहते थे। उन्हें स्नातक की पढ़ाई करनी थी। इसके लिए उन्होंने साल 1937 में स्नातन धर्म महाविद्यालय कानपुर में प्रवेश लिया और वहां के ही छात्रावास में रहने लगे। वहां उनका संपर्क श्री सुंदर सिंह भंडारी, श्री बलवंत महासिंघे जैसे कई गणमान्यों के साथ हुआ। अब रोज राजनीतिक चर्चाएं देर रात तक चलने लगीं।

यहां दीनदयाल जी के मन में राष्ट्र की सेवा का भाव प्रज्जवलित होने लगा। साल 1939 में दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपनी स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। सन 1937 में जब दीनदयाल जी कानपुर में स्नातक की पढ़ाई कर रहे थे, उस समय के उनके सहपाठी वालुजी महाशब्दे की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए।

संघ के संस्थापक परमपूजनीय डॉ हेडगेवार का सनिध्य कानपुर में ही प्राप्त हुआ था। श्री बाबा साहब आप्टे एवं दादा राव परमार्थ इनके ही छात्रावास में ठहरते थे। स्वतंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर जब कानपुर आए थे, तब दीनदयाल उपाध्याय जी ने उन्हें संघ शाखा में आमंत्रित कर बौद्धिक वर्ग करवाया था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अनुशासित युवकों का एक क्रमबद्ध संगठन है। वहां बिना प्रशिक्षण प्राप्त किए कोई कार्यकर्ता नहीं बन सकता था। यह प्रशिक्षण तीन वर्ष का होता है। उन दिनों ग्रीष्मावकाश में 40 दिनों का यह प्रशिक्षण शिविर नागपुर में होता था। जिसको संघ शिक्षा वर्ग कहा जाता है। दीनदयाल उपाध्याय ने 1939 में प्रथम वर्ष का तथा 1942 में द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन प्रशिक्षणों से उनकी यह धारणा पुष्ट हुई कि केवल अंग्रेजों को गाली देना मात्र ही देशभक्ति नहीं है। स्वतंत्रता केवल जुमलेवाली या नारेबाजी का मुद्दा भी नहीं है वरन् संगठित एवं संस्कारित समाज ही सच्चे स्वतंत्र्य का अधिकार होता है।

संघ के शारीरिक कार्यक्रमों को दीनदयाल उपाध्याय जी ठीक प्रकार से नहीं कर पाते थे। परन्तु बौद्धिक कार्यों में उनकी प्रतिभा देखते ही बनती थी। दीनदयाल जी प्रशिक्षण शिविर की बौद्धिक परीक्षा में भी प्रथम आए थे। इस संदर्भ में श्री बाबा साहब आप्टे लिखते हैं "पंडित दीनदयाल जी ने उत्तर पुस्तिका में कई हिस्से पद्दवद्ध लिखे थे किन्तु वह तुकबंदी नहीं थी अथवा केवल कल्पना का विचार भी नहीं था। गद्द के स्थान पर पद्ध का माध्यम अपनाया गया था। विवेचन नपे-तुले शब्दों में था और तर्कशुद्ध था। मैं प्रभावित हुए न रह सका"

सन 1939 में स्नातक पास करने के बाद अब दीनदयाल जी अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर के लिए सेंट जोन्स महाविद्यालय आगरा आ गये और पूर्वार्द्ध में प्रथम श्रेणी में पास हुए। इसी दौरान बहन रमा देवी जी (मामा की बेटी) की तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब रहने लगी। दीनदयाल अपनी उत्तराद्ध की परीक्षा छोडक़र बहन की सेवा में जुट गये। लाख कोशिशें करने के बाद भी वह अपनी बहन को बचा न सके। बहन की मृत्यु ने उन्हें पूरी तरह झकझोर कर रख दिया। अब वह बहुत ही दु:खी रहने लगे थे। तब मामा जी के बहुत प्रयत्न के बाद उन्होंने प्रशासनिक परीक्षा दी और उसे पास भी कर लिया। परन्तु अंग्रेजो की दासता उन्हें कहां स्वीकार थी। इसलिए अंग्रेज सरकार की नौकरी करने से साफ मना कर दिया। अत: अध्यापन स्नातक करने के लिए प्रयाग चले गये। उनकी यह अध्ययन उर्जस्विता सार्वजनिक जीवन में जाने के बाद प्रखरत्म होती चली गई। प्रभूत सामाजिक एवं दार्शनिक सृजन क्षमता के बीज हमें उनके विद्यार्थीकाल में ही दिखाई देते हैं।

अध्यापन स्नातक करने के बाद परिजनों को अपेक्षा थी कि प्रशासक न सही दीनदयाल अध्यापक की ही नौकरी कर लें। परन्तु उसी दौरान सन 1942 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय घर-द्वार छोडक़र सन्यासीवत् संघ में जीवन व्रती प्रचारक बन गये। सन 1942 से 1951 तक दीनदयाल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में जीवन व्रती प्रचारक के नाते विभिन्न दायित्वों का वहन करते रहे। अध्यापन स्नातक करने के बाद दीनदयाल अपने मामा जी के घर कभी नहीं गए।

सन 1940 में मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान निर्माण का प्रस्ताव पारित करने के बाद सांप्रदायिक पृथकतावाद, उम्माद एवं हिंसाचार बढ़ गया था। दीनदयाल का मन इस अवस्था के प्रतिकार के लिए मचल रहा था। वह परिवार को भूलकर संघ के कार्यों में तल्लीन हो गए थे। उस दौरान उन्होंने एक पत्र अपने मामा को लिखा। हमारे पतन का कारण हम में संगठन की कमी है। बाकी बुराइयां अशिक्षा आदि तो पतीत अवस्था के लक्षण मात्र हैं। .....रही व्यक्तिगत नाम और यश की बात, सो तो आप जानते ही हैं कि गुलामों का कैसा नाम और कैसा यश।

अपने कार्य की प्रेरणा इस युवा काल में उन्होंने इतिहास की जिस धारा से उन्होंने ग्रहण की थी, उसकी ओर वह इस पत्र में संकेत करते हैं। "जिस समाज और धर्म की रक्षा के लिए राम ने वनवास सहा, कृष्ण ने अनेकों कष्ट उठाए, राणा प्रताप जंगल-जंगल मारे गए। शिवाजी ने सर्वस्व अर्पण कर दिया। गुरु गोविंद के छोटे-छोटे बच्चे जीते जी किले की दीवारों में चिने गये। क्या उनकी खातिर हम अपने जीवन की झूठी अकांक्षाओं का त्याग भी नहीं कर सकते?"

सन 1942 से 1945 तक लखिमपुर में ही प्रचारक रहे। पहले उन्होंने जिले का तथा बाद में विभाग का काम संभाला। उनकी कार्यसिद्धता, संस्कारक्षमता एवं बौद्धिक प्रखरता को देखते हुए साल 1945 में ही उन्हें संपूर्ण उत्तर प्रदेश का सह प्रांत प्रचारक बना दिया गया।

उन दिनों उत्तर प्रदेश के प्रांत प्रचारक श्री भाऊ राव देवरस थे। दीनदयाल जी की संगठनात्मक प्रतिभा एवं संघ कार्य में उनके योगदान के विषय में भाऊ राव लिखते हैं। "संघ के उन प्रारंभिक दिनों में, जब कार्य कंटकाकीर्ण था, उस समय तुम (दीनदयाल उपाध्याय जी) कार्य के लिए चल निकले। तब संघ कार्य के विचारों को उत्तर प्रदेश में कोई जानता नहीं था। तुम ने स्वयंसेवक के नाते इस कार्य का जिम्मा अपने कंधों पर उठा लिया। उत्तर प्रदेश के संघ कार्य की नींव में तुम ही हो। आज का यह संघ का रूप तुम्हारे ही परिश्रम का, तुम्हारे की कर्तव्य का फल है।

अनेक संघ कार्यकर्ता तुम्हारे जीवन से प्रेरणा लेकर चल रहे हैं। अपने जीते जी तुम इसी मार्ग पर चलने पर प्रोत्साहित करते रहे। .....हे आदर्श स्वयंसेवक! संघ के संस्थापक के मुख से आदर्श स्वयंसेवक के गुणों पर बौद्धिक सुना था, तुम उसके मूर्तिमंत प्रतीक थे। प्रखर बुद्धिमता, असामान्य कर्तव्य, निरहंकार व नम्रता के आदर्श"

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इन प्रारंभिक दिनों में उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयीन केंद्रों पर अधिक पुष्पित व पल्लवित हुआ। दीनदयाल उपाध्याय इसके लिए पूर्ण रूप से करणीभूत थे। जब महात्मा गांधी की हत्या के बाद संघ पर प्रतिबंध लगा था, तब दीनदयाल उपाध्याय प्रचार एवं सत्याग्रह संचालन के सूत्रधार बने। 'पंचजन्य' को सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया। दीनदयाल ने भूमिगत रहते हुए 'हिमालय' निकाला। वह भी उस समय की सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया। फिर उन्होंने 'राष्ट्रभधर्म' निकाला और इसी दौरान ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का इतिहास लिखा गया था। दीनदयाल उपाध्याय की इसमें भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

7. एक प्रचारक से भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष पद तक का सफर:-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के सामाजिक सौहार्थ भरे जीवन से राजनीतिक जीवन को अलग नहीं किया जा सकता। दीनदयाल जी राजनीति में संस्कृति के दूत थे। दीनदयाल जी का सार्वजनिक जीवन अपने अंतिम क्षणों तक एक प्रचारक का ही जीवन रहा। जब देश आजाद हुआ, उस समय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को स्वतंत्र भारत के मंत्रीमंडल में पहला उद्योग मंत्री बनाया गया। परन्तु सन 1950 में हुए नैहरु-लियाकत समझौते के कारण वे कांग्रेस सरकार से नाराज हो गये। मुखर्जी जी उस समझौते के बहुत खिलाफ थे। इस समझौते से वह इतने दु:खी हुए कि उन्होंने कांग्रेस सरकार से त्यागपत्र दे दिया। इसके प्रश्चात मुखर्जी जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मा.स. गोलवलकर (गुरुजी) से मिले।

राष्ट्रीयता की अवधारणा के संबंध में दोनों सहमत हुए। श्री गोलवलकर अपने एक आलेख में लिखते हैं ".....जब ऐसा मतैक्य हुआ, तब मैंने अपने निष्ठावान एवं तपे हुए सहयोगियों को चुना, जो नि:स्वार्थी और दृढ़निश्चयी थे, जो नए दल की स्थापना का भार अपने कंधों पर ले सकते थे।.....इस प्रकार डॉ. मुखर्जी अपनी आकांक्षा भारतीय जनसंघ की स्थापना के रूप में साकार कर सके", उन्होंने यह भी लिखा कि "हम दोनों (डॉ. मुखर्जी और गोलवलकर) ने अपने-अपने संगठन और कार्यक्षेत्र में दृष्टि से महत्वपूर्ण कदम परसपर विचार विनिमय के बिना नहीं उठाते थे। ऐसा करते समय हम इस बात पर भी ध्यान रखते थे कि एक-दूसरे के कार्य में हस्ताक्षेप या दोनों संगठनों के परस्पर संबंध के विषय में भ्रम उत्पन्न न हो तथा एकदूसरे पर हावी होने का प्रयत्न न हो"

गुरुजी ने जिस नि:स्वार्थी व दृढ़ निश्चयी सहयोगितयों को नए दल का कार्यभार ग्रहण करने के लिए मुखर्जी जी को दिया, उनमें सबसे महत्वपूर्ण थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी। भारतीय जनसंघ का प्रथम अधिवेशन 29, 30 व 31 दिसंबर 1952 को कानपुर में संपन्न हुआ था। दीनदयाल उपाध्याय जी इस नए दल के महामंत्री निर्वाचित हुए। यहीं से अखिल भारतीय स्तर पर

दीनदयाल उपाध्याय जी की राजनीतिक यात्रा शुरू होती है। अपनी वैचारिक क्षमता को उन्होंने प्रथम अधिवेशन में ही प्रकट किया। इस अधिवेशन में कुल 15 प्रस्ताव पारित हुए थे, जिसमें से सात अकेले पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने ही प्रस्तुत किये। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का डॉ मुखर्जी जी से कोई पुराना परिचय नहीं था, लेकिन कानपुर अधिवेशन में डॉ मुखर्जी जी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की कार्यक्षमता, संगठन कौशल एवं वैचारिक प्रगल्भता को अनुभव किया। पंडित दीनदयाल जी की इन्हीं खुबियों से डॉ मुखर्जी जी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने गुरुजी से यहां तक कह डाला "यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाएं, तो मैं भारतीय राजनीति का नक्षा ही बदल दूं" ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का कोई व्यक्तिगत जीवन न था। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जीवन समर्पित प्रचारक थे। भारतीय जनसंघ को अपने जीवन का ध्येय कार्य उन्होंने संघ के स्वयंसेवक के नाते ही स्वीकार किया था। अत: संघ, जनसंघ के अलावा उनका कोई अन्य सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत जीवन नहीं था। वे 17 वर्षों तक जनसंघ के महामंत्री के नाते उनके संगठनकर्ता एवं विचारक रहे।

सिद्धांत एवं विचारों के विषय में गुरुजी ने मुखर्जी से जिस प्रकार स्पष्ट व आग्रहपूर्वक चर्चा की थी। तदानुसार दीनदयाल उपाध्याय जी ने प्रथम कानपुर अधिवेशन से ही जनसंघ की कमान संभाल ली थी तथा वैचारिक दृष्टि से जनसंघ के चरित्र को स्पष्ट करने वाला 'संस्कृतिक पुनरुत्थान' प्रस्ताव उन्होंने रखा था। भौगोलिक अथवा क्षेत्रीय राष्ट्रवाद कल्पना को नकारते हुए उन्होंने कहा "जनसंघ का मत है कि भारत तथा देशों के इतिहास का विचार करने से यह सिद्ध होता है कि केवल भौगोलिक एकता, राष्ट्रीयता के लिए पर्याप्त नहीं है। एक देश के निवासी 'जन' एक राष्ट्र तभी बनते हैं, जब वह एक संस्कृति द्वारा एकरूप कर दिए गए हों। जब तक भारतीय समाज एक संस्कृति का अनुगामी था तब तक अनेक राज्य होते हुए भी जनों की मूलभूत एकता बनी रही। परन्तु जब से विदेशी शासकों ने अपने संवर्धन के लिए देश एकात्मता को भंग कर विदेशपरक संस्कृतियों को इस देश में जन्म दिया है, तब से भारत की राष्ट्रीयता संकटपन्न हो गई है। अनेक शताब्दियों तक एक राष्ट्र का घोष करते हुए भी भारत में मुस्लिम सांप्रदायवादियों के द्विराष्ट्र की विजय हुई। देश विभक्त हुआ और पाकिस्तान में गैर मुस्लिमों का रहना असंभव हो गया। दूसरी ओर भारत में मुस्लिम संस्कृति को अलग मानकर उसकी रक्षा और संवर्धन के ब्याज से उसी द्विराष्ट्र वाली प्रवृति का पौषण हो रहा है, जो राष्ट्र निर्माण के मार्ग में बाधक है। अत:.....भारत की एक राष्ट्रीयता के विकास और दृष्टिकोण हेतु यह नितांत आवश्यक है कि भारत में एक संस्कृति का पौषण हो" ।

पंडित उपाध्याय जी ने मुस्लिम व इसाई के लिए 'हिंदू समाज' के ही 'अपने उन अंगों' शब्द का प्रयोग किया तथा उन्हें 'भारतीय जनजीवन' का अंग स्वीकार किया। मुसलमानो अथवा ईसाइयों की अलग संस्कृति और उसके संरक्षण के विचार को तथा अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक विचार को वह राष्ट्र के लिए विभेदकारी तथा सांप्रदायिक विचार मानते थे। उनके अनुसार "भारतीय जनसंघ बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक संज्ञाओं को न तो उचित समझता है तथा न ही इस विभाजन को स्वीकार करता है। वह भारत को अखंड अविभाज्य और एक राष्ट्र समझता है। संपूर्ण राष्ट्र की संस्कृति एक है। इस बात पर दृढ़ विश्वास और आस्था रखता है कि जनसंघ धर्मों के आधार पर विभिन्न संस्कृतियों की कल्पना को स्वीकार नहीं करता। वह तो एक राष्ट्रीय संस्कृति एवं एक देश का सिद्धांत मानता है। इस बात को जानते हुए भी एक एतिहासिक और कुछ अन्य कारणों से इस देश के जन समाज का कुछ अंश राष्ट्र जीवन की पुनीत मूलधारा से अलग हो गया है और कुछ अंशों में राष्ट्रविरोधी भी हो गया है। उसका उपचार करने में जनसंघ विश्वास करता है। उसकी पृथकतावादी मनौवृति का समर्थन करने के लिए वह कदापि तत्पर नहीं....." ।

दिसंबर 1952, कानपुर के फुलबाग के प्रथम भारतीय जनसंघ के अधिवेशन से लेकर दिसंबर 1967 के 14वें कालीकट अधिवेशन तक दीनदयाल जी भारतीय जनसंघ के लगातार महामंत्री रहे।

जनसंघ के अधिवेशन, आंदोलन, अभ्यासवर्ग तथा प्रस्ताव आदि सभी कार्य दीनदयाल उपाध्याय जी के व्यक्तित्व से आप्लावित थे। देश में चलने वाला उनका अखंड प्रवास देश भर के कार्यकर्ताओं के लिए उन्हें सुलभ बनाता था। अधिवेशन में प्रस्तुत किया जाने वाला उनका महामंत्री प्रतिवेदन केवल एक औपचारिक आंकड़ों का प्रतिवेदन नहीं वरन् संगठन की गतिशीलता का एक उत्साही एवं आत्मालोची आह्वान होता था। महामंत्री का प्रतिवेदन जनसंघ की विकास यात्रा को बेवाक प्रस्तुत करने वाला साहित्य है।

यह महामंत्री प्रतिवेदन केवल जनसंघ की गतिविधियों के दस्तावेज ही नहीं वरन् राष्ट्रीय घटनाचक्र की जंत्री भी है। वर्ष 1957, 1962 तथा 1967 के महानिर्वाचनों के महामंत्री प्रतिवेदन तो किसी शोध प्रकल्प के उच्च स्तरीय अकादमिक अध्ययन द्वारा प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध सरीखी पुस्तिकाएं हैं। इसमें राजनीतिक स्थिति, दलों की राजनीतिक एवं सांख्यिक निष्पतियां, घटनाचक्र पर विभिन्न टिप्पणियां, सर्वांगपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक संकलन किया गया है।

उनके नेतृत्व में जनसंघ का मत प्रतिशत हर चुनाव में बढ़ता ही रहा तथा विधानसभाओं एवं संसद में भी जनसंघ का प्रतिनिधित्व बढ़ता ही रहा।

कालीकट अधिवेशन में पार्टी ने उन्हें अध्यक्ष चुन लिया। दीनदयाल जी विख्यात हो गये, नजर लग गई। सन 1967 के एतिहासिक कालीकट अधिवेशन में दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस अधिवेशन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय तथा जनसंघ दोनों ही अपनी प्रतिष्ठा व प्रभाव के शीर्ष पर थे। दिनांक 29, 30 व 31 दिसंबर 1967 को जनसंघ का 14वां अधिवेशन उपाध्याय जी की ही अध्यक्षता में संपन्न हुआ था। भले ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी केवल 44 दिनों तक ही भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे हों, परन्तु उनके द्वारा राष्ट्र निर्माण में दिया गया योगदान अतुलनीय है। उपाध्याय जी आज भी आम जनमानस की प्रेरणा के मुख्य स्त्रोत हैं।

उपाध्याय जी आजादी के बाद संपन्न हुए सामाजिक-राजनीतिक प्रयत्नों का परिणाम यह मानते थे कि "सामान्य जन राजनीतिक चेतना का जागरण इस युग की सबसे बड़ी देन है" उन्होंने कहा "तात्कालीक राजनीतिक लाभों के लिए उसे साधन बनाना अच्छी बात नहीं है" वह उनका कालजयी वौद्धिक है, जो युगों तक भारत की राजनीति का मार्गदर्शन कर सकता है।

8. महापथ गमन:-

11 फरवरी 1968 को सुबह लगभग पौने चार बजे मुगलसराय स्टेशन के लीबर मैन ने टेलीफोन पर सहायक स्टेशन मास्टर को सूचना दी कि स्टेशन से लगभग 150 गज पहले, लाइन के दक्षिण की ओर बिजली के खंभा नंबर-1276 के नजदीक एक लाबारिश लाश कंकड़ों पर पड़ी हुई है। पुलिस के सिपाही निगरानी के लिए ड्यूटी पर तैनात कर दिए गये। सहायक स्टेशन मास्टर ने जो मेमो पुलिस को भेजा था, उस पर लिखा था "ऑलमोस्ट डेड" सुबह चिकित्सकों ने जांच कर उसे पूर्णत: मृत घोषित कर दिया। जब शब को प्लेटफार्म पर रखा गया। उत्सुकतावश लोगों की वहां भीड़ एकत्रित हो गई। किसी को भी यह पता नहीं था कि यह लाश किसकी है। भीड़ में अचानक एक व्यक्ति जोर से चिल्लाया और बोला "अरे..... यह तो भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष पंडित दीनदयाल उपाध्याय हैं" यह खबर आग की तरह चारों ओर फैल गई और विषाद छा गया।

फरबरी माह में संसद का बजट सत्र प्रारंभ होना था। इसकी तैयारियों को लेकर 11 फरवरी 1968 को भारतीय जनसंघ के संसदीय दल की बैठक दिल्ली में रखी गई थी, नवनिर्वाचित अध्यक्ष पहली बार इस बैठक में शामिल होने वाले थे। 10 फरबरी को दीनदयाल लखनऊ में थे। सुबह दीनदयाल के पास पटना से बिहार प्रदेश जनसंघ के संगठनमंत्री अश्विनी कुमार का फोन आया, उनका आग्रह था कि बजट सत्र में संसद तो लंबी चलेगी अत: उन्होंने 11 फरबरी को पटना में संपन्न होने वाली बिहार प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में आने का आग्रह किया। पंडित दीनदयाल जी ने नवनिर्वाचित महामंत्री सुंदर सिंह भंडारी से चर्चा कर दिनांक 11 फरबरी को दिल्ली जाने के बजाय पटना जाने का कार्यक्रम तय किया। भारतीय जनसंघ के महामंत्री होते हुए भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय रेल में तृतीय श्रेणी के डिब्बे में ही यात्रा करते थे तथा एक्सप्रेस रेल की वजाय पैसेंजर रेल में उनको लिखने-पढने का समय मिल जाता था एंव छोटे-छोटे स्टेशनों पर भी कार्यकर्ताओं से मिलने का अवसर मिल जाता था। अध्यक्ष बनने के बाद सब लोगों ने मिलकर तय किया कि दीनदयाल जी को अब प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करनी चाहिए। अत: पठानकोट-स्यालदह एक्सप्रेस से उनके लिए प्रथम श्रेणी का टिकट खरीदा गया। यह ट्रेन 10 फरबरी को सायं सात बजे लखनऊ से चलती थी। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन उप मुख्यमंत्री रामप्रकाश गुप्त, भारतीय जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष पितांबर दास उन्हें छोडने स्टेशन पर आये। उनका बिस्तर और एक पुस्तकों का झोला भी कंपार्टमेंट में रख दिया गया। गाड़ी रवाना हुई, उन्होंने हाथ जोडक़र सबसे विदा ली। रात्री में 12 बजे जोनपुर स्टेशन पर जोनपुर के राजा साहब के निजी सचिव कन्हैया लाल जी उनसे मिलने आये। उन्होंने दीनदयाल जी को राजा साहब का पत्र दिया। रात्रि में 12 बजकर 12 मिनट पर गाड़ी जोनपुर से चली। गाड़ी मुगलसराय पहुंची। स्यालदह-पठानकोट एक्सप्रेस सीधी पटना नहीं जाती थी। गाड़ी रात्रि में 2:15 बजे पर प्लेटफार्म नंबर-एक पर पहुंची, तो वह बोगी जिसमें दीनदयाल उपाध्याय जी यात्रा कर रहे थे, उस गाड़ी के डिब्बे से काटकर शटिंग करके दिल्ली-हावड़ा एक्सप्रेस में जोड़ दी गई, जो लगभग रात्रि 2:50 बजे मुगलसराय से रवाना हुई। सुबह रेल पटना पहुंची। पर पंडित दीनदयाल जी उस रेल में नहीं थे।

पंडित दीनदयाल जी का शव विशेष वायुयान से दिल्ली लाया गया। इधर दिल्ली शोक में डूब गई थी। बाजार बंद, दफ्तर बंद राजिंद्र प्रसाद रोड की तरफ लोग बढे चले जा रहे थे। पुलिस और स्वयंसेवकों को व्यवस्था करने में कठिनाई हो रही थी। भीड़ पर भीड़ उमड़ रही थी। पुष्पवर्षा, माल्यार्पण, भावभीनी श्रद्धांजलि और रूदन- सिसकियों का क्रम जारी था। इस बज्रपात ने सभी को किंर्कत्रव्य विमूढ़ कर दिया था। कौन वह हत्यारा, जिसने इस ऋषितुल्य आजातशत्रु के प्राण हर लिये, उनके पावन शरीर को यातना पूर्वक मरोड़ डाला? कौन देता जवाब, सभी तो मर्माहत थे। 12 फरबरी प्रात: काल भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ जाकिर

हुसैन श्रद्धांजलि अर्पित करने आये। प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी तथा उपप्रधानमंत्री मोरारजी देसाई भी पुष्पमाला अर्पित करके गये। नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, संस्कृतिक विभूतियों का तांता लगा रहा। दिल्ली में अपनी श्रद्धा अर्पित करने जन समुद्र उमड़ पड़ा। मध्याह्न एक बजे महामानव दीनदयाल जी की पार्थिव देह शव राथ में रखी गई।

9. महाप्रस्थान की तैयारी:-

चार अश्वरोही सिपाही शव यात्रा के आगे-आगे चल रहे थे। शव-रथ के आगे संघ-जनसंघ के वरिष्ठ अधिकारी चल रहे थे। मार्ग के दोनों ओर श्रद्धालु जनता अंतिम दर्शन एवं पुष्पार्पण के लिए उपस्थित थी। पीछे महिलायें गायत्री का मंत्रोच्चारण करती हुईं चल रही थीं। श्रद्धांजलि, पुष्पवर्षा के कारण मंथर गति से चलती हुई यह यात्रा सायं छह बजे निगम बोध घाट पर पहुंची। सायं 06:45 बजे अंतिम श्रद्धांजलि का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। 07:06 बजे मंत्रोच्चारण के बीच उनके ममेरे भाई श्री प्रभुदयाल शुक्ल ने मुखाग्नि दी। 07:23 बजे कपाल क्रिया हुई। महामानव पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का पार्थिव शरीर पंचतत्व में विलिन हो गया।

10. उपसंहार:-

भले ही आज पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी हमारे मध्य नहीं है। परन्तु राष्ट्र निर्माण के लिए, उनके द्वारा किये गये महान कार्यों तथा दिये गये महान विचारों के लिए ये राष्ट्र सदा ऋणी रहेगा। ऐसी दुर्लभ महान आत्माएं बार-बार धरा पर अवतरित नहीं होती। हम सब देशवासी अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हैं कि जिस धरा पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने जन्म लिया। हम भी उसी देश के वासी हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. दीनदयाल उपाध्याय (प्रथम संस्करण) दीनदयाल उपाध्याय की वाणी, जागृति प्रकाशन, नॉएडा
2. दीनदयाल उपाध्याय (1958) भारतीय अर्थनीति, विकास की एक दिशा, राष्ट्र धर्म प्रकाशन, लिमिटेड लखनऊ
3. दीनदयाल उपाध्याय (नौवां संस्करण, 2008) एकात्म मानववाद, जागृति प्रकाशन, नॉएडा
4. प्रो. मधु दान्द्वते (प्रथम संस्करण, 1978) गाँधी, लोहिया एंव दीनदयाल, दीनदयाल रिसर्च इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली
5. दीनदयाल उपाध्याय (प्रथम संस्करण 1968) इंटीग्रल ह्युम्निज्म, जागृति प्रकाशन, नॉएडा
6. दीनदयाल उपाध्याय (प्रथम जैको संस्करण, 1968) पोलिटिकल डायरी (हिंदी), जैको पब्लिसिंग हाउस, मुंबई
7. दीनदयाल उपाध्याय (मई, 2007) राष्ट्र चिन्तन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ
8. डॉ सरवण सिंह बघेल (श्रवण) (30 जुलाई 2021) पंडित दीनदयाल उपाध्याय जीवन दर्शन एंव एकात्म मानववाद दर्शन का रेखांकन, बीएफसी पब्लिकेशन
9. कृष्णानंद सागर (2001), दीनदयाल उपाध्याय की वाणी, जागृति प्रकाशन, नॉएडा
10. संजय द्विवेदी (2015), भारतीयता के संचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय, विजडम पब्लिकेशन
11. नरेंद्र शिवाजी पटेल (2021), पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्तित्व, कृतित्व व नेतृत्व, बीएफसी पब्लिकेशन
12. भालचंद्र कृष्णाजी केलकर (2016) पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन, सरुची प्रकाशन, दिल्ली

आलेख/पत्रिका सूची :-

1. दीनदयाल उपाध्याय (24 अगस्त 1953) अखंड भारत: ध्येय और साधन, पांचजन्य
2. दीनदयाल उपाध्याय (श्रवण शुक्ल, वि.सं. 2005, जुलाई-अगस्त 1948) यात्रा से पूर्व, पांचजन्य पृष्ठ 9.
3. दीनदयाल उपाध्याय (05 जनवरी 1959) हमारी अर्थनीति का मूल आधार, पांचजन्य
4. दीनदयाल उपाध्याय (22 जून 1959) कांग्रेस के 'समाजवादी नारे' से ही कम्युनिस्ट के पैर जमे, पांचजन्य
5. दीनदयाल उपाध्याय (22 जून 1959) केरल और जनसंघ, पांचजन्य
6. दीनदयाल उपाध्याय (02 जनवरी 1959) समाजवाद, लोकतंत्र अथवा मानववाद, पांचजन्य
7. दीनदयाल उपाध्याय (कार्तिक पूर्णिमा, वि. सं. 2005, अंक-6): चिति-2, राष्ट्र धर्म
8. दीनदयाल उपाध्याय (कार्तिक शुक्ल वि.सं. 2005) राजनितिक आय-व्यय, पांचजन्य
9. दीनदयाल उपाध्याय (शरद पूर्णिमा वि.सं. 2006 अंक-1) राष्ट्र जीवन की समस्याएँ, राष्ट्र धर्म
10. दीनदयाल उपाध्याय (भद्रपद कृष्ण-09 वि.सं. 2006) जीवन का ध्येय, पांचजन्य
11. दीनदयाल उपाध्याय (विजय दशमी विशेषांक वि.सं. 2006) मानव की स्थिति और प्रगति, पांचजन्य
12. दीनदयाल उपाध्याय, (21 जनवरी 1962) (चुनाव विशेषांक, पृष्ठ 41 'मताधिकार कागज का टुकड़ा नहीं, लोकाज्ञा है', पांचजन्य
13. एकात्म भारतीय अर्थ चिन्तन, सितम्बर-2016, पृष्ठ संख्या-3, मातृवंदना